

ओं नमः त्रिपुर सुन्दरी ॥

—: लघुस्तवः :—

हेन्द्रस्यैव शरासनस्य दधती मध्ये ललाट प्रभा
शैवली कान्ति मनुष्या गौरिव शिरस्यातन्वली सर्वतः ।
सषासौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
हिन्द्या नः सहसा पदै स्निभिरद्य ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥२॥

اند رازه سنغری کمان بیش دفت منغر لاس زارانی
چند برس بیش سفید درن دقتی شیرس پطیس چمکانی
هر دین میس سرپه سندی یا طمی چمکوئی دفتی روزانی
سوی تیر پور شندی سانس هر دین منغر روزتن
سوی جوتی سر و پ سر سوتی سر و پ بنقد اسی طیکتن
تقرن پدان هندی انوگره کن - توری و دده پاپ سانی شرتن

या मात्रा त्रुपसीलता तनुलसत्तत्त्वसिद्धिं स्वर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां सम्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेयं न पुनः स्पृशन्ति जनने गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

یوسف زوجه تری لی النبی منبری تازی منش
سازد تری دار زواج دختد اس کندی شکستی چھو نای
بیزه اکثر منز کلا یوسف ٹھیکت چھی آسانی
سوی کلا جگت پیدہ کرنس پیٹھ آسونی اودیوگی
امیر کوی دھیان ایس منش زانی کرنا کوی سرش
گر بھ بہاوس شرمی بہاوس ادہ کر بنی بیہ منش

दृष्ट्वा संभ्रमकारि त्वस्तु सहसा ऐ ऐ इति व्याहृतं ।
येनाकृत वशादपीह वस्दे बिन्दुं बिनाप्याक्षरम् ।

तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचः सूक्ति सुधारसद्वय मुचो निर्यान्ति वक्रास्त्रजात् ॥३॥

ہی دیوی بدگاہہ خوفناک چیز دھت جلد جلد
یہی مجر اس تی منتر بنی تیس چون انو گرہ
کری اسے بندہ روتی پدی طلب تی حل
نیری وانی تندی نوکھ لٹھ پتر تر کوی سوسرہ

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्बुवि ।
आख्यानं प्रति पर्व सात्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयिता नैत्वोच्चरन्ति स्फुटम् ॥४॥

ہی انتی اردنی دیویم منتر چون کام راجہ نادہ آسون
سوی گوسار سوتر بیج اکھر ست تپ ہی ایشی جھی پرا
سوئی منتر شکل بنجہ کانہر پھوی پٹھ چھو زانہ دن
اوتھ پر دن پٹھ برمن میوک دیا کھیاں جھی کران
واتر ناوت اوچھ جاپے پٹھ ہی منتر او شچارن کران

यत्साद्यो वचसा प्रवृत्ति करणे दृष्ट प्रभावं बुधैः
तार्तीयौकं मुहं नमामि मनसा त्वद्वीजमिन्दु प्रभम् ।
अस्त्वोर्वाऽपि सरस्वती मनुगतो जाड्याम्बु विच्छिद्यते
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं विना सिद्धिदः ॥५॥

تیرمی بیج اکھر وک مہا وانی کٹنس پٹھ گال وچھا
سروپ بنجہ سو لوگ دارنامے روتی پدی دیوان
تھ اکھر چندرہ دتی مستر چھن من کن پر نام کران
مور کھ روپی پاپنس گال نہ بابت وار وانی گن بنا

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं
कूटस्था यदिवा मृथक् क्रमगतं बद्धा स्थित व्युत्क्रमात् ।
यं यं काम मपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
जप्तं वा सफलं करोति सहसा तत्तं समस्तं गुणम् ॥६॥

ہی دیوی تیس پری چون بیج اکھر بد کوئی
یہی کامے بابت تیس منش اسے جپان
دوشہ روس یاد دوشہ منش اسے سیو دیا بیو بیوئی
تیس منش بڑہ منش منس ساری مطلب جھی نیوئی

वामे पुस्तक धारिणीः मुभयदा साक्षिभ्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदान पेशल करं कर्पूर कुन्दो ज्ज्वलाम् ।
उज्ज्वलाम्बुजा पत्र कान्त नयन स्निग्ध प्रभालोकिनीं
यै त्वामम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥७॥

کھو ورس تھیں منہ نہ پرستگار است ہی بھوانی
یا کہ اتھ چوان پریش زن بھکتی دیر دیوانی
یہیں بی دھیان کری چوان امبا من نس پرین بنانی
چھینس تھیں چپ مال بیہ سیت ایتھے دیوانی
پھولتہ پمیز شہ تر و زن ترہ بھکتی دچھانی
اسے کا نہ سو بھگت من تر چھی دانا وانی

ये त्वां पाण्डुर-सुण्डरीक पतल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
तिज्जन्तीमुमुल द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्याति वक्त्राम्बुजा-
क्षेपां भारति ! भारती सारसरित्कल्लोल लोलोर्मिवत् ॥८॥

بے ریش کران امرت کوئی چھٹے تھجے ایوانی
بے روک پاٹھ لکھن دی مکھن شہر سوتی ہننر دانی

ये सिन्दूर पराग पुञ्जमिहितं त्वत्तेजसा द्यामिमा-
 भुर्वी चापि विलीनयावकरस- प्रस्तारमग्नमिव ।
 पश्यन्ति क्षणमाप्यऽनन्यमनसा स्तेषामनङ्ग-ज्वर-
 क्तान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावकदृशो व्रश्मा भवन्ति स्फुटम् ॥६॥

چانی تیر کن یس اکھا دجھی سندری بھئی اکاش
نہ دلوئی منہ کہنے ماترس یس ہی دھیان دارانی
تمہ شکستی یکر کامدو تیر سیت بند کرانی
پریتھوی لاچی رنگہ فٹمچ دجھی آسمن منس باس
سارے شکستی تیر روپ نہ تیرن چھی قایا الوانی
تہو یا تہو تیر خویمت مرگہ کچھ کانہر کرانی

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाङ्गद धरा मा, बद्ध काञ्चीसजं
ये त्वां चेतसि तद्गते ज्ञानमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वैश्वसु विभ्रमाद्, हरहः स्फारी भवन्त्यश्विरं
माद्यत्कुञ्जर कर्ण लाल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०

چمکوئے سونہ مختہ کنواچی چھبند رثہ لاگانی
 بس نی پھیان جون منس کہی تھیا بھس لگانی
 سوخی بوسہ ہستی کنہ کی جرت کھ پٹھن پھیل آسانی
 سوئے مسنر تاگر پیرلہ دن چھک تھ گھر کس گنڈانی
 تس دوی شاہ شوق گھر رثہ تامت لہجی
 سارے سیمیدایس پرشمن قرار کر تھ بھی روزانی
 آمبھیا شاشی بھٹ مہڈیت جڑا جڑا
 بھمبھٹ مہج

बन्धूक प्रसवारुणाम्बर धरा प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजात्रिनयना मापीन मुहुस्तनौ
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्गित तनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥ ११ ॥

بشو بھوئی چانی جیستہ کو کٹہہ نال منشا کلاہ سس
 بند دھو پوشہ رنگہ سرخ پوشاک تلہ مردہ اسس
 کس ناگر گندھہ سنج تری ستر دارا نی
 چون سرد پانانہ نایت ہی دھیا بھکتی چھی سترانی

जातोऽप्यल्प परिच्छेदे क्षितिभुजा सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापैकतः ।
यद् विद्याधर वृन्द वन्दितपदः श्रीवत्सराजोऽभवत्
देवि ! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ॥ १२

کاتبه ای جامع و کلی نگارش از سبب زامنت
تس جگر در تس یادان دیوتا چھی یو زانی

سکلی پر تھوی پیٹ کران اسد راج آسن پراؤمنت
چھو مہا تس چانی یاد پوزا تس مہنتر مہرانی

चण्डि। त्वच्चरणाब्जुजार्चनविधौ बिल्वीदलेऽल्लुण्ठन
त्रुटयच्छककोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।

ते दण्डांकुशचक्रचापकुलिश श्रीवत्स मत्स्यांकितैः
जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्बोज प्रभैः पाणिभिः ॥१३॥

ہی ژندی چانی ژرن پوزایہ پٹھیس انا فی
بلکہ پوش ژرٹ ژرٹ کنڈی ہیئت اٹھیس چھی ژھنانی
ٹونگ تیر کرانی ہند کشادہ پس کنڈی تہہ سیت مسانی
تھہ اٹھ سس پرش سیر زفرہ راجہ ہاراج بنانی

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ !
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमुवाप्नुवन्ति तस्मा विघ्नैरविघ्नी कृताः ॥ १४ ॥

برہمن راجہ پوش یاشد رچانی پوزا کرانی
دودھ گنوا چھ شراب پوزا کئے کن تہہ ارین کرانی
شرہا پرکرنی کینترہا منگن چھک ضرور ژرن دیوانی
بے روک پاٹھ وگنہ رستوی سدھی سو بر اوآئی

शब्दानां जननी त्वमत्र सुवने वाग्वादिनीत्युच्यते
त्वत्तः केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी
सा त्वं काचिदचित्यरूप महिमा शक्तिः परा गीयते ॥१५॥

ہی ماما تر بھون منر شبد روپ تہہ آسانی
جگتس منر ناؤ چو نوئی سر سوتی چھی ونا فی
ژری نشہ کیشو اند راجہ دیوتا پرکٹ بنانی
کلیم انش برہما دک ژری نشہ لے گزہا فی
کوستانہ نہ سرنی ہما سس تہہ نہشت کھتی چھی ونا فی

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजा शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्ये लोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णोऽस्त्रयः ।

यत्किञ्चिज्जागति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः ॥१६॥

[illegible]

رازہ گہن منتر نہ لکھی۔ جسے نہ منتر نہ بھومی
 کہیں پیٹھ چھک نہ درگاہ پڑا نہ بھومی
 اَلطوتی کلبانہ روپی خوف کالہ نوران سر شکاری شری
 ہم اَلطہ جان نہیان چول سر تن شہ اپدادر کرانی
 माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
 मातङ्गी विजया लया भगवती देवि शिवा शाम्भवी ।
 शक्ति, शंकर बल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी मेरवी
 ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्यस्ति ॥१२॥

مایا ژئی گندلی ژئی کریا ژئی مددتی ژئی
 وجیا ژئی جیا ژئی اختیار داجیدنه ژئی
 شکر سز ناچھک ژئی سسوتی بھیروی ژئی
 کالی ژئی کلا ژئی - مانی تاسگی ژئی
 چت سر دی ژئی ساسر تھه ژئی شامبھوی شکتی ژئی
 هریمه شکر پد اپر تر پرا تا ایم روپ ژئی

आर्द्रः पञ्चवितैः परस्परयुतैः द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः
काद्यैः शान्तगतैः स्वरादिमिथो ज्ञान्तैश्च तैस्तैः स्वरे

नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ॥१६॥

अष्ट सारंगी अकरोन दोउरी कर मनावत
क पृष्ठ ता निशेदुस रल्लोत नाव जانی बनाव
ही त्रपरी दुस सारंगी जانی रल्लोत नाव
ही भिरु रल्लोत नाव रल्लोत नाव

बौद्ध्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तापत
भारत्या त्रिपुरेत्यनन्य मनसा यत्राद्यवृत्ते स्फुटम् ।
एक द्वित्रिपद क्रमेण कथित स्त्वत्पाद संख्याक्षरैः
मन्त्रोद्धार विधि विशेष साहितः सत्संप्रदायान्वितः ॥२०॥

जानी चकरी का लन भूँ तो चैनी कन मन लकावत
प्यान पान भन्दी शमार कीवा अकरोन मनावत
कोडु निके दोउरी त्रिपरी पद कर मन्त्र रल्लोत नाव
रल्लोत नाव रल्लोत नाव रल्लोत नाव

सावद्यं निरवद्यमस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं संजायमानं हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि ध्रुवम् ॥२१॥

नंदी सुस बान्दी रल्लोत नाव त्रपरी
रल्लोत नाव रल्लोत नाव रल्लोत नाव
पनर पान रल्लोत नाव रल्लोत नाव
जानी भक्त्या भन्दी रल्लोत नाव

चवौ स्तवः

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै :—

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं
मौलौ हवेन निहितं महिषासुरस्य ।

पादाब्जं भवतु मे विजयाय मञ्जु-

मञ्जीर शिञ्जित मनोहर मुम्बिकायाः ॥ १ ॥

یاد چانی سندر آئند دایک اندراجن تراویتھ تختہ مال
بیمیدت زیر دیکھت ہشتا سترئی کھنہ باترس نزووت سوپاتال
سوی روئیہ یاد چون روز تن مہ ہر دیس
یتھ بہ امکائی بوزہ شرونیہ شرونیہ تال
سوی منہر یاد بختن مرہیتھ جے کارک مرہاوتن کمال

सौन्दर्य विधममुक्ते भुवनाधिपत्या-

संपत्ति कल्प-तरव स्त्रिपुरे ! जयन्ति :

एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध-

पूरेन्दव स्त्वयि जागज्जननि : प्रणामाः ॥ २ ॥

یم پرنام سندر نیکہ ولا اسک جائے یتھ تہدی شمار کر نہ ایوان
ترن لون ہندی راج سمیدایہ ہندی کلیہ ورکھ ہی یم پرنام گھی بنان
یم پرنام کوتائی روپی مکدہ پوشہ پھولارونہ بابت چند مرہ گھی بنان
ہی جگت زرنی دتے ترہ میانی یتھ ہی پرنام گھس بہرئی کئی کران

देवि ! त्वुक्ते व्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते

वाचस्यति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।

तास्मा न्निसर्ग जडिमा कतमोह मत्र

स्तोत्रं तव त्रिपुर तापनिपत्ति ! कर्तुम् ॥ ३ ॥

چانی توتا کرنس پٹھ چھو نہ سامر تھ
 برہسپت نہ دیوتا جڈ بنا فی !
 ہی ترن تاپن گالوینہ چھس مور کھ بہ اسقہ
 کتہ سامر تھ بہ کرہ توتا چانی

मातः ! तथापि भवतीं भवतीब्र ताप
 विच्छिन्नये स्तुति महार्णव कर्णधारः ।
 स्तोतुं भवानि ! स भवच्चरणार विन्दु -
 भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥ ४ ॥

ہی مانا زانت یی سمارہ کٹھن دوکھ
 چٹنہ بایت کروم توتا یی چانی
 یہئے توتا یتھ سمار ساگر س
 بنی میسانی ناویہ بانج میانی
 چانی یاد مکملہ کے لوچر آوشہ
 بکواسی بیہو چھس توتا کرانی

सूते जागन्ति भवती भवती बिभर्ति
 जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि ।
 मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि
 लीलायितं जयति चित्रनिदं भवत्याः ॥ ५ ॥

برہماروپہ جگنس کران پیسہ تری
 ویشنوروپہ پالن کران تری
 رودرہ روپہ سہارا سخرس کران تری
 موہ دیوان ترہیہ تھتی گالان تری
 لیلائے میر چانی چھوس دچھان رنگہ رنگہ
 جے کار آسنئے چان لیلا یینی

यस्मिन्मनागुपि नवाम्बुजपत्र गौरि !
 गौरि ! प्रसादमधुरा दृश मादधासि ।
 तस्मिन्निरन्तर मुनङ्ग शराव कीर्णाः -

सीमन्तिनी नयन सन्ततयः पतन्ति ॥ ६ ॥

ہی گوری ہمیشہ رنگہ صفایس امرتہ نظر چھک ژہ تہرہ دانی
تس پٹھنتی نیم ساری یو گنتی کادیوکس زن چھوش گزہائی

पृथ्वीभुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य
विद्याधर प्रणति द्युम्बित पादपीठः ।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स षष्ठ
त्वत्पाद पङ्कजरजः कणजः प्रसादः ॥ ७ ॥

اودین راجس کھراوی پٹھ کران میٹھ و دیادر تہ دیوتس چھی آدین
چکھرتی عمدہ اوس تم پراومت چانی یاد گردی ہندی اوگرہ کن

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतैः
पुण्यै रत्नलप्य मतिभिः कृतिभिः कवौन्दैः ।
क्षीर क्षपाकर दुकूल हिमाव दाला
कैरध्यवापि भुवन त्रितयैऽपि कीर्तिः ॥ ८ ॥

ہی دیوی چاشن ہمیشہ پادون ہنبری گردی پٹھ کریمو پرنام
تم بٹے نرمل اوتھ تیز بوز سس دانہ اوتھ کوی پراومتو نام
دودھ چتھرہ ریشم دستر بہرہ شینہ پاٹھ صفا بٹھ ترن لونن مننر بٹے نیکنام

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा -
मुद्गोपित प्रियतमा मन्द रक्त गौतिम् ।

नित्यं भवानि ! भवती मुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु ॥ ६ ॥

کلیم و رکھ پوشو سیت چانی پو جا لولہ سیت چھ گیوان چانی گیت
نت سمیر کے گفازہ و پی گھرن مننر وایان و دیادھر سوزتہ ساز گیت

लहमीवशी करण कर्मणि कामिनीना -
माकर्षण व्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः ।
नौरन्ध्र मोह तिमिर छिद्दुर प्रदीपो
देवि ! त्वदंघ्रि जनितो जयति प्रसादः ॥ १० ॥

چانی پیرتہ مکھ سیوالے ہند پر ساد وش کران لخمی تہ بیہ سدرھین
شکستی سو پروان مودہ روپی گینہ انیہ گتہ گالان ترانگی سیت زن

देवि ! त्वदंघ्रि नावरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचो मुदमुद्वहन्ति ।
सेवानति व्यतिकरे सुरसुन्दरीणा -
सौमन्तसोमि कुसामस्तव कायितं त्रैः ॥ ११ ॥

راج بوانی چانی ژرن ہند نہ رتن مختہ دفتی داران زن کرن
یوگنسی یلہ پرن بیوان ژہ ژرن پٹھ نہ چمکہ پر زلان مس تہ ستمہ متن

सूक्ष्मं स्फुरत्तुहिन दीधिति - दीप्ति दीप्तं
महा ललाटममरायुधरश्मि चित्रम् ।

हृच्चक्रचुम्बि हृतमुक् कणिकानुरूपं
ज्योति र्यदेत दिदमम्ब ! तव स्वरूपम् ॥ १२ ॥

تاثره مستک حین در زن پرزلون رام رام بدرنیه دونی چسکون
هر دین ننگی جیوتی سروپ زن ماج چون سروپ چھوی پرکاش آسون

सिन्दूर पासु पडल च्छुरितामिव द्या
त्वन्तेजासा जतुरस स्नायितामिवोर्वीम् ।
यः पश्यति ज्ञानमपि त्रिपुरे विहाय
ब्रीडां मुडानि मुदृश स्तमनु द्रवन्ति ॥ १३ ॥

سندری گردی سستی جرمت آکاش لایچھ رنگ پرتهوی شران کرته زن
یس دچھی کھنه ماترکس لاج تراوت تیس سدهی ماج بلوانی پته دورن

मातः ! मुहूर्ते मृषि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारस प्रसरतन्नु निभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यनन्य मनस स्तमनङ्ग तसाः
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्व गुणं तरुण्यः ॥ १४ ॥

ہی مانا یس مہورس دھیان کری چون سروپ لایچی رنگہ تار سان
سندر جوان ایچھہ رچھہ نہ ڈلونی منہ سہسہ کامنائی تادیچھہ تس چھی سمران

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि ! वपु स्त्वदीयं

ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्धसाध्याः ॥ १५ ॥

مولادارک پران بند کرتھ یمن
سندری ہیوت رنگت بمپوش زن
ہر دس منز اتھ بمپوش شس پٹھ
چون سروپ باسان رات کہو دن
تمنی پرشن ہند چھی دھیان داران
سده سادھ دیوتا ترہیہ ست جن

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डुल मध्यवर्ति
रूपं तवाम्बुः नवयावक पङ्क्तं विङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाण भिन्न -
वक्षः स्थला मुगदशो वशगा भवन्ति ॥ १६ ॥

سرہیہ مندکہ پرکاشہ ووزلی رنگہ سس بیہ
لاچھی رنگہ سس یم چون دھیان داران
کامد پوسندی تیرہ چچہ وچھہ سسہ
اچھہ رچھہ تمن ماتحت چھی روتان

हयं तव स्फुरितचन्द्र मरीचि गौर -
मूलोक्ते मनसि वागुधिदैवतं यः ।
निःसीम सक्तिरचनामृत निर्भरस्य
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥ १७ ॥

یم پرشن منس منز چند رہیہ پٹھ چمکون
سر سوتی روپیہ چون دھیان داران
حدروس دانی مدر امرت بمہر تھئی
نیری تمن نزل پرواہ ہیو زن

शार्वाणि! सर्व जन वन्दित - पादमन्दो!
पद्मच्छदच्छवि विडम्बितेत्र - लक्ष्मि!

निष्पाय मूर्ति जन मानस राजहंसि !

हंसि त्वपापदमनेकविधा जनस्य ॥ १८ ॥

ہی پاپ گالونی تری پاو کلین ساری جیو چھی پر نام کرائی
 پمپہ شہ برگہ کے دفتری ہند پاٹھ چائی نتر کمل چھی شو بھائی
 شدہ منٹس چھک چت ساگر منتر راجہ ہنس ہنس زن تہ روزانی
 تری چھک سادھکس نانا پرکارک دوکھ تہ داد آپدا دور کرائی

इच्छानुरूप मनुरूप गुण - प्रकर्ष

सङ्कुषणि ! त्वमनुसृत्य यदा विमर्षि ।

जायत स त्रिभुवनैक गुरु-स्तदानीं

देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥ १९ ॥

ہی شکر شتی پنے بڑھائے ٹلی چھک ترن سروپ پانہ داران
 بلہ ہی دیوی ترن لون ہند کیول گورو شیونا تھ چھو اپدان
 ادہ سوی شمشو ترن بھون ہند نمود پاٹھ سو تر دارہ بنان

यौयं चकास्ति गगनाणव रत्नमिन्दु -

यौयं सुरासुरगुरुः पुरुषः पुराणः ।

यद्वाम मूर्धमिदं मन्धक - सूदनस्य -

देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥

اشہ مدرس منتر زنن یوسہ شو بھاژندر س چھے انانی
 کن تہ اسرکس گورو چھم استونیه بھگوانس شکھتی دیوانی
 سہ ہما دیوسنر چھم اردا بلی سوی چھک تری بی چھوانج سدھ بنانی

ध्यातासि हैमवति येन हिमांशुरशिम -
 मालाऽमलघुति-रुकल्मष मानसेन ।
 तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमनल्प कल्प -
 मऽल्यैर्विनैः सृजसि सुन्दरि! वाग्विलासम् ॥ २१ ॥

یُس مُنری چون دھیان نرمل کر لُوس
 ہی سدری تش ترہ جھٹٹ کران پیدہ
 چند رُس سمان اندرہ شدہ منہ کن
 سر سوتی ہند و کاس انوگرہ کن

त्वा व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति
 त्वा कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
 त्वा मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति
 देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ॥ २२ ॥

سارئی و اتت ترہ کامنا دایک
 دشمن پٹھ جے سُس ترئی لبتا
 لختی - کلا - بیہ مالا روپ
 چھی و نان ترئی جیا ترئی اوما روپ

उद्धाम काम परमार्थ सरोज षण्ड -
 चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट् प्रकाराम् ।
 नोह द्विमैन्द्र कदनोद्यत बोध सिंह -
 लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥ २३ ॥

یوسہ کامراجہ بیج کھر پموش ڈلہ کے
 مولادار پٹھ شٹھ چکر س منر
 پوسہ موہ ہستس گالہ بانیت
 تمسی جگوتی ماتا ترہ پراچی سترن
 پھولنہ باپت سر یہ روپ روزانی
 ادپاسی روپ یوسہ تتی آسانی
 گیانہ روپ سہہ گفنی چھی روزانی
 گل گندھ تش چٹس پرنام کرانی

गणेश वटुक स्तुता रतिसहाय कामान्विता
 स्मरारिवर विष्टरा कुसुमबाण बाणै र्युता ।
 अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च तिलैस्त्रिभिः
 कदम्बवन मध्यगा त्रिपुरसुन्दरौ यानु नः ॥ २४ ॥

گنیش تہ بھرون چھئے تو تا ترہ کرچ
 رتی سان کا دیو پد سیوا کروں
 شونا تھ پانہ چھوی آسن چو نہئی
 کا دیو پوشہ بانن سوداروں
 انگہ کو سمو بیمہ ترسیو سدھوید و جج
 کدیمہ جنگل گس منتر پد روزانی
 سوی روپا چون مانج ہی ترپور سندی
 کلیان بہ کر تنم تہ راجھ میانی

त्वामैन्दवीमिव कलामनु भाल देश -
 मुद्रासिताम्बर तलामवलोकयन्तः ।
 सद्यो भवानि! सुधियः कवयो भवन्ति
 त्वाभावनाहित धियां कुल कामधेनुः ॥ २५ ॥

ہم ستکس منتر ترہ چندرہ کلاش
 وچھی چمکا دمتی آکاشہ سس
 ہی دیوی جلدی چھئی تم بنان دانا
 بہ بیڑی کوتائی سس
 چھک تھن دیوان جی سارنی مطلبین
 چانی بلوئے کن تم نزل بوز سس

उत्तम हेमरुचिरे त्रिपुरे! मुनीहि
 चेतश्चिरन्तनमद्यौघ वनं लुनीहि ।
 कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य
 त्वत्संस्मृतौ भडिति मे निगडा स्त्रुटयन्ति ॥ २६ ॥

تاومت سون زن ترہ چمکان ترپرائی
 شرھ کرمن بہر پایہ کھلہ میانی لون

سبب روي چيس منتر چکوس به کامنای پيرين همد چکوم به بور
چانی سمرنی کن جلد جلد چکفن به پیری بیکه ای عانس به انو گره چون

रुद्राणि! विद्रुम मयीं प्रतिमामिव त्वा
ये चिन्तयन्त्युरुणकान्ति मनुन्य रूपाम्।
तानेत्य पद्मल दृशः प्रसमं भजन्ते
कण्ठावसक्त मृदु बाहुलता स्तरुण्यः ॥ २० ॥

هي رودرانی پس چانس سړپس وچي رودر شکله سړپسندی پاڅه چمکاني
اپور وړپس پخسي دهیان کړي سندر نظر و سبب اچهر رچهر وړان
زوره سیت تمه کړني پڅه اتخه تراوی انداندی روز تهنس سیدوا کران

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त -
मुद्गावयेन्मदन दैवत मुद्गरं यः ।
तं रूपहीनमपि मन्मथ निर्विशेष -
मालोकयन्त्युरु नितम्बभरा स्तरुण्यः ॥ २८ ॥

پس چون دهیان کړی دین پوشه زکړس اونا شه کامرا به بیجه اکهرس
یدوی روپ کن آسی سوی بد شکل اچهر رچهر وچین زن کامد پوتس

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धो दृशो स्वद्रुण -
ग्रामोक्तर्णन रागिता श्रवणयो स्वत्संस्मृति श्वेतसि ।
त्वत्पादाचन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु ॥ २९ ॥

هي ډلوی چانه در شک ابلاش هر دمه نترنی منتر به روز تن

چانی گن بوز نک تمامه استن هر دمه روز تن میان کنن
 چون نامه سمرن زلس منز گری گری چانی یاد پوجا میانن اهنن
 چون کیرتن کرونی روز تن مه وانی اوپا سنا چانی کم مته مته گز هتن

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र राशि -

स्कन्द द्विपातन हुताशन वन्दितायै ।

वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमात -

रुन्त बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥ ३० ॥

سرسوتی ترپور سندری جگت ماما بهونی شوری چھک اسوینہ ٹری
 برہما رودر اندر سریہ چندر مہ کمار ویشو کنیش چھوئی پوجان ٹری
 اندرہ نبرہ واتر ثرہ تر پھولس سارسی گل گنڈت میون پر نام واتی نے ٹری

यः स्तोत्र मेतदनु वासर मौश्वरायाः

श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।

तस्येप्सितं फलति राजभि रीड्यते, सौ

जायेत स प्रियतमौ हरिगोक्षणा नाम् ॥ ३१ ॥

یاسی ئی چون تو تر پری پر تھد دہرہ سارا یا کتو بوزی ادہ بنیہ تس کلیان
 بیکر ورت راجہ تس کرن پوجا ساری مطلب تس چھی نیران
 سنج کاما سہ تس چھی سپدان سوی چھو یو گنین ہند زیادہ لوٹھ زبان

अथ घटस्तवः ॥

ॐ नमो महामायायै

देवि! त्र्यम्बकपतिपार्वति सति त्रैलोक्यमातः शिवे!
शर्वाणि त्रुपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले कालद्वये शूलिनि!
त्वत्पादप्रणतानुनन्यमनसः पर्याकुलान्याहि नः ॥१॥

ہی دیوی چھکڑہ تمہیکہ پتہنی	ژی وناں ستی ژی پاروتی
تربلوکی ہمنسز ماما بھگوئی	ژی وردیوان ژی چھکمرڈانی
ژی تربلورسندری ژی رودرانی	ژی بھیانک روپ ژی شروری
ژی چہنڈی ژی ترشول دارانی	ژی کلی کالس ناش کرانی
آئے شرن نہ پادن ونئے کن چھی نمھئی	ویا کلنئے ہمنسز اسہ رچھ ژی

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्त मूर्च्छा इव ।
प्राप्त प्रौढमदा इवाति विरहग्रस्ता इवात्ता इव ।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधि विबुद्धरागमनसो ध्यायन्ति वामभुवः ॥२॥

چجرہ تمہرہ کس زہر کن موچھت نشہ کس	دربن چھمت چانی عارچرہ کس
ہی ہمالہ پتری بیم کرن پون دھیان	تم آسوئی چھی سٹھاہ بھاگوال
اچھہ رچھہ ایک گربنڈہ اوپادھی رچھہ	راکھہ سٹھہ دی دھیان چھی دارال

देवि! त्वां सक्ते देव यः प्रणमति क्षोणीभूतस्तं नम-
 न्याज्जन्मस्फुरदङ्घ्रिः पीठं विलुठत्कोटीरं कोठिच्छटाः ।
 यस्त्वामुर्चयति सोऽर्चयते सुरगणैः यः स्तोति स स्तूयते
 यस्त्वां ध्यायति तं स्मरति विधुरा ध्यायन्ति सिद्धाङ्गनाः ॥३॥

تسنری کھراوی پٹھان رازہ موکھ ڈوان	یُس پریش اکھ لہ کری ژہ کن پرنام
تس پرشس پوزان دیوہ کھل	یُس پرش لوکھ کن کری چانی پو جا
دیوتا تسنری استوتی کران	یُس پرش کران کسی چلانی توتا
سرگچہ اچھ رچھ تس چھی سمران	یُس پرش من کن کری چوئی ہیان

ध्यायन्ति ये ज्ञानमपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
 लावण्ययौवनधनैरपि विप्रयुक्ताः ।
 ते विस्फुरन्ति ललितायतलोचनानां
 चिह्नैकमिति लिखितप्रतिमाः पुमांसः ॥ ४ ॥

منز نفس کسی کھنہ ماتر س	ہی تریو پر سندی یس کری ہیان پون
بیمہ جوانی روس بیمہ نردھن	ید و سوا بیمہ سندر تانی روس
شکلہ کھنن سوی دھیان سرون	اشٹہ بندھی تس منچے لبہ پیٹھ

एतं किं तु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
 किं वाङ्मुनिगलाम्यनेन सहसा किं वैकतासाधये ।
 जस्येत्यथ विवशो विकल्पघटना कूतेन योषिज्जनः
 किं तद्वन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ॥५॥

ایہہ اسندن استخوان
 ایتھس پرشس کری پریش نظر یست

کیا سنا نکلتا گزشتہ نا اسی سیت کوئی کن پانس سیت رٹھن
 اچھ رچھ سندر گری گری تیں کُن بے روک پاٹھ آدین سپدن
 سنا رس منز کیا چھو در بھتس ہر دس منزس ترہ پانہ فیرن

विश्वव्यापिनि! यद्वदोश्वर इति स्थाणावूनन्याश्रयः
 शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
 इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः शुद्धा रुजो बाधितु
 त्वद्भक्तानामपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥

ہی جگت دانی پتھ شینو نا تھس ایشرہ نا و جگتس منز و نان
 تھ پٹھ ماج بھوانی تری جگتس منز شکھتی مہر نا و چھوی ترہ شو بان
 بدوس ایشر بھکتن سمارس منز کوئی کوئی دوکھ چھو دیوان
 اسچر چھ ماج چون کو دھس پٹھ تی چھکنہ پنن بھکتن دوکھ ترہ دیوان

इन्द्रो मेध्यगता मृगाङ्क सदृश च्छाया मनोहारिणी
 पाण्डुत्फुल्ल सरोरुहासन गता स्निग्ध प्रदीपच्छविम्।
 वर्षन्ती ममृतं भवानि भवती द्यायन्ति ये बहिन-
 स्ते निर्मुक्त रुजो भवन्ति विषदः प्राज्मन्ति तान्मूरतः॥

چند مرس ش صفا چند ریمہ کہس پھوتس پمپوشس پٹھ تری
 خوش ایونہ پرکاشہ کہس ترہ آسویہ یوسہ کران ورسن امرت کوی
 یم فی دھیان کرن تم بیماری روس روزان اپد اچھی تمنی دور سپدان

पूणेन्दोः शकलै रिवति बहुलैः पीयूष पुरैरिव
 क्षीराब्धेः बहुरा भैरै रिव सुधा पङ्कस्य पिण्डैरिव।

प्रालेयै रिव निर्मितं तव वपु ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चितान्त निर्हितार्तिं ताप विपद स्ते सपदं विप्रति ॥ ८ ॥

پونم چندر زان امرت پراواه زن
شيشن هيو صفا چون سروپ بناوت
گچھ پنڈھ کيهره سرج لهر زن
يس کري دهيان تنه مننه لوکر کن
تس چھی دودگر هان دوکھ عار جرتہ اپدا
سمپدا سو پراوان جننه جنمن

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोऽस्मसन्तो
त्वां ग्रंथि पञ्चकमिदं तरुणार्क शोणाम् ।
रागार्णवे बहुलरागिणि मज्जयन्तो
कुत्सं जगद् दधति चेतसि तान्मृगा ह्यः ॥ ९ ॥

يس سادھک کري دهيان چون باسوں
پانژھ دل ژتھی باله سر به سندی پاٹھ
چنل پرکاشه سس بجلی سمان
اوزله رنگه سستی زن ژره چمکان
جگت زن رنگه کن سرخی سان
تس دوی گری گری دهيان چھی دھاران
يس ئی دهيان کري تس یوگنی چتس منر

लाक्षारस स्नपित पङ्कज तन्तुतन्वी -
मुन्तः स्मरत्यनु दिनं भवर्तो भवानि ।
यस्तं स्मरतिममः प्रतिम स्वरूपा
नेत्रोत्पलै र्मुगदृशो भृशमर्चयन्ति ॥ १० ॥

پرتھ دوهه يس داری پونئی دهيان
نتر رويه پوشوي چھی پوجا کران
لاچھی سیت رنگه پیموشه تار هیو
تس کامه دیوزانت کمه یوگنی

स्तुमस्त्वा वाच्यमव्यक्ता हिम कुन्देन्दु शेचिवम्
कदम्बमाला विभाणामा, पादतल लम्बिनीम् ॥ ११ ॥

چندرس کوندہ پوشش پوشش پو سہچی دستان
نال چٹھے ژہ شیرہ پٹھ پادن تان
تو تالان چھی اسی ژہ ہی واکھدیوی
شوہیونی کدنبہ چھک ماجی ژہ دارونی

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासुनगतां प्रलियपांडु त्विषं
वर्षन्तीममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेपि रन्ध्रेपि च।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाति प्रसन्नापि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति ॥

کلس پٹھ چندرہ شوہون ژہ درامت
بہتہ چھک ژہ شوہونی برہمہ ندرس منز
پیش بی دھیان کری چون ہی دیوی تس
پیشوش پٹھ ژہ دفتی سس
اسرت چھان بڈی شوہاے سس
سرسوئی نیرہ مکھ بڈی وکاسہ سس

ददातीष्ठा भोगान् क्षपयति रिपून् हन्ति विपदो -
दहत्याधून् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हठादन्तरदुःखं दलयति पिनष्टीष्ट - विरहं
सकृद् ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ॥ १२ ॥

مطلب چھک دیوان دشمن ژہ گالان
آدین مالان وپادین شمران
اندوم دوکھتہ داد پیرہ ورہ چہ گالان
آدین چھک ژہ ناش کران
شکھتہ سمپدا چھک ژہ ویستاران
بیم اکی لٹی ماجی دھیان چون کران
تیم ادہ مکھ نہ پایہ نشہ چھی موکلان

यस्त्या ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय

त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्चत्युच्यते !

यश्च त्र्यम्बकवल्लभे तव गुणानुकर्णयत्यादरा -

तस्य श्रीर्न गृहादप्यैति विजयस्तस्याग्रतो धावति ॥ १४ ॥

دوبائے کن بجی ایس ژہ پیرادی	بیس چون کری سمن بوسیت پسانی
لولہ نتر وسیت کری درشن	شده منہ کن جیہ ناو چون کری کری
ہر وقتہ توتائی کری چانی بیہ پوجا	شرو نہ کن من کن ایس وچاری
تمہ روستوی ایس نہ روزی اکھ ساعت	کن گیوی چانی لولہ سان دن تہ رات
جئے ایس پر تھ وقتہ برو تھ چھو دوران	لجی چھنہ لتندی گہری نشہ نیران

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! ह्यीयते न स्मृतायां

का का कीर्तिः कुलकमलिनि! व्याप्यते न स्तुतायाम् ।

का का सिद्धिः सुरवरनुते ! प्राप्यते नार्चितायां

कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमूलाम्बितायाम् ॥ १५ ॥

یم گلنی نہ چانے سمرنی سیت	کست دوکھ چھی تم ہی راکسن گالونی
یوسہ نہ بنی چانے توتائے سیت	کوسہ چھی نیکنامی ہی گلنس کھارونی
یوسہ نہ پرافت سپدی چانی پوجائے سیت	کوسہ کوسہ چھی سدھی ہی سدھی راتری
یم نہ سدھنن چانی چنتن سیت	کم کم چھی تم لوگ ہی جگت امبا

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः

ये कालि! कालधनपाश नितान्त बद्धाः ।

ये चण्डि! चण्डगुरु कल्मष सिन्धु मग्ना -

स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥ १६ ॥

ہی دیوی یم ہا کالہ سندھی کٹھنس
 ہی کالی یم ہا کالہ سنہری موچی
 ہی چندی یم باریک تہ کٹھنس
 بلہ کرن دھیان چون تلہ چھک رچھان
 مٹھس منتر باگ گیت
 ندری ہر پاٹھ چھی کٹھنہ آمرت
 پایہ کس سمندر کس منتر چھ فطمت
 تمن موکلا وان بیہ تاران چھی

लक्ष्मी वशीकरण चूर्ण सहोदराणि
 त्वत्पाद पङ्कज रजांसि चिरं जयन्ति ।
 यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे
 लुम्पन्ति देव लिखितानि दुरङ्गराणि ॥ १० ॥

موج بوانی لخی و شس کرنس پٹھ
 چانی پرنامہ وزی لگہ یمن لالاس
 سوی پانچ گرد گالی دُر اکھترس
 یاد چہ گرد چانی چھی طاقتہ سس
 یاد چہ گرد چانی بڑی نشانہ سس
 جگتس منتر بنی سوئے کار سس

रे मूढाः किमयं ब्रूथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते
 यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः ।
 भक्तिश्चेद्विनाशिनो भगवती पादद्वयोः सेव्यता-
 मुनिद्वाम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मी पुरो धावति ॥ १८ ॥

ہی موڑھ کیا زی چھک لے فائدہ تپ کرن
 یگنہ کن دال کن بڑی دکھنای کن
 گڑھ شرن ماجہ شاہ کانی پرا وچہ بھکتی
 ادہ چھو لمتہ پمپوشہ نتر و سس
 پنٹس شریرس تکلیف دیوان
 کیا زہ چھک گرہ پنٹس خالی کران
 ہر کرہ دن تسندوی یاد سیون
 لجنی چہ بروٹھ بروٹھ صفی دورن

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
 सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः ।
 श्लक्ष्णं वसे मधुरमुदि भजे वरस्त्री
 देवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामद्योतुः ॥१६॥

काली मंगे न बिकेसी तारे न بازی غار جر تراوه کره کیبسی سیوا
 زاول وستر داره کهمه مودری چیز اچهر رچهر نی سیت کره کھیلا
 بله ماج یوانی هر دیس منز مه روزک تله میانی کامنله سده سیدن

शब्दब्रह्ममयि ! स्वच्छे ! देवि ! त्रिपुर सुन्दरि ! ।
 यथाशक्ति जपे मूर्त्तां गुहाणा परमेश्वरि ! ॥२॥

ہی شبدر وپی نرمل سروپی ہی دیلوی ہی ترپور سندی
 کریتھا شکھتی مه چانی یوجا کر سوکار ہی پر میشوری

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः
 अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥

وزن سکھی ماج سادھک ساری یم دوشٹھ آسن تم گلتن
 وروپ اوستھامته ماج بنتن گورہ دیوس دامہ پٹھ پرسن روزتن

दर्शनात्पापशमनी जयान्मृत्युविनाशिनी ।
 पूजिता दुःखदौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी ॥

درشنه پاپ ساری چھی گلان چانی چپر مرتو چھونا ش سیدان
 سے کن چون مہا گیونہ کن بھوس دوکھ دُر باگیہ دور چھس گڑھان

नमामि यामिनीनाथ लेखालङ्कृत-कुन्तलाम् ।
भवानौ भवसन्तापनिर्वापण-सुधा-नदीम् ॥ २३ ॥

نمسکار چھو س کران میس کیشس منز چہ
امرت ندی ہندی پرواہ سبت زن

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम् ।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥ २४ ॥

منز جین آست کریا جین آست
تھ سار سئی ہی پر میشوری

अथ अम्बस्तव : ॥

ॐ नमो जगदम्बिकायै ।

यामाङ्गमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामर्धं पल्लवितशंकर-रूप - मुद्रां
देवोमङ्गनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥ १॥

یس ومان دریاویدرہسہ زانہ ونی
شوبھائی سُس جگتس چھر چھوئی
چھوس پھوان تس یادن پٹھ پرن
یس مَنیشرا د پر کرتی مانان
تس شیونا تھ سنسر اردانگی یوسہ
تس آمرت بہ ایکاکر چت بنت

अम्ब! स्तवेषु तव तावदुक्तृकाणि -
कुण्ठी भवन्ति वचसामपि गुम्फनानि ।
डिम्भस्य मे स्तुतिरुसावसुमञ्जसापि -
वात्सल्य निघ्न हृदया भवती धिनोति ॥ २ ॥

ہی مانا جانی تو تا کر نس پٹھ
مرہ شر سنسری تو تا بد چھی ٹوٹ پھو ٹی
برہما واتی تی جدھ بناتی
باونائے کن ہر دیس ترہ سکھ دیوانی

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।

निष्पन्दमान सुखबोध सुधास्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवता जनानाम् ॥३॥

چند کاشه روپ کن ناد بند روپ کن
چند کاشه روپ کن ناد بند روپ کن
وانی ہند بند روپ چون چھو آسون
وانی ہند بند روپ چون چھو آسون
چھکان چھک تن منز تنس ژہ پلنئے
چھکان چھک تن منز تنس ژہ پلنئے

आविर्भावत्पुलक संततिभिः शरीरै-
निष्पन्दमान सलिलै नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गद-पदाभिरुपासते ये
पादौ तवाम्ब ! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

آسن لیس روم اوتھ دینہ شریس
آسن لیس روم اوتھ دینہ شریس
وانی کن پد پری گت گچھ گچھ
وانی کن پد پری گت گچھ گچھ
تس ہیو کوس سنا چھو تر بلوکی منز
تس ہیو کوس سنا چھو تر بلوکی منز

वक्त्रं यदुद्यतमभिष्पृतयो भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि ! शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब ! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः ॥५॥

مکھ لیس آسی اود لوگہ سس
مکھ لیس آسی اود لوگہ سس
شیر پسند وی آسہ گری گری ہی موج
شیر پسند وی آسہ گری گری ہی موج
من لیس لگمت آسہ موج ژری سکن
من لیس لگمت آسہ موج ژری سکن
آسی کا نہ سو بہا گوان کتا نی خاص تر کے
آسی کا نہ سو بہا گوان کتا نی خاص تر کے

मूलालबाल कुहरादुद्धिता भवानि !
 निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
 भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु -
 निःष्यन्दमान परमाभूततोय रूपा ॥ ६ ॥

مولادارش درانج تهر شه پمپوش چلتھ بجلی ہندی پاٹھی ہیئر کن کھستان
 سہسر دلسی منتر اثرت توره نیران امرت دانی روپیہ بن بھی واتان

दग्धं यदा मदनमेकमुनेकधा ते
 मुग्धः कटाक्ष विधिरङ्कुरया चकार ।
 धत्ते तदा प्रभृति देवि ! ललाट नेत्र
 सत्यं हियेव मुकुली कुतमिन्दुमौलिः ॥ ७ ॥

یله زول کا دیو اکھ شیو ناتھن اگر گاہی تھ کیت اویدا و تھ
 تنہ پٹھ مہادیو منتر لائک نتر شرم کن اوڈوی نتر چھوٹوڈ را و تھ

अज्ञात संभव मुनाकलितान्ववायं
 भिक्षुं कपालिनमुवास समुद्वितीयम् ।
 पूर्व करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
 शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ! ॥ ८ ॥

نہ جانتی بہنم کولہ سس بھکیو ننگے تہ دوہی روس زھنت کلہ مال
 چانی دواہ بر وٹھ ہی ہمالہ پتری کس اوس زمانا شیو سدا حال

चर्मोम्बरं च शवभस्म विलेपनं च
 भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
 वैताल संहति-परिग्रहता च शम्भोः
 शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात् ॥ ६ ॥

جرم پوشاک شمشان بجهسا ملت
 نبوت کھل پروار آسون نس شيوس
 نژاد شمشان سوبھیک منگه دن
 شوبان تلہ یلہ ترہ سیت چھو یکون

कल्पोपसंहर्ण केलिषु पण्डितानि
 चण्डानि खण्डपरशोरुपि ताण्डवानि ।
 आलोकनेन तव कोमलितानि मातः ।
 लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥ १० ॥

کلیاتک ناش نچو ناتہ گندو نا
 ساروی سوبدلان سمپداين منر
 تس هاديو سنتر چھی بد کرید
 بیلہ تراوان تتھ ترہ شوبھ نظرا

जन्तोरुपश्चिमतनोः सति कर्मसाग्रे
 निःशेष पाश पठलच्छिदुरा निमेषात् ।
 कल्याणि! देशिककटाक्ष समाश्रयेण
 कारुण्यतो भवसि शाम्भववेददीक्षा ॥ ११ ॥

جیوس کرمن سپدتھ شدھی
 نژی چھک دیبای کن گورہ روپ بنتھ
 اگر نمیشہ پھانسی ستمو تس ترہ گالان
 شو شکھتی دیکھیا ایدیش نژی کران

मुक्ता विभूषणवती नवविदुमाभा -

यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या ।

एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां

कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥ १२॥

ختمه مال زبور رودره ماله چهن چهن
آسمه چک زه موج شو بهایمان
یس پورشس آسمه سندھیا تارکوسس
چون سروپ یته هیونت باسان
تس پورشس تری بهونجه یوگنئی
پانجه کان روس تی کا مدیو سمران

ये भावयन्त्यमृतवाहिमि रंशुजालै -

राग्यायमान भुवनाममृतेश्वरी त्वाम् ।

ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीयां

ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्षाम् ॥ १३॥

ہی ماما یم زه سروئی آسن
امرتہ روپ سکھ دیوان ترن بهونین
تم نران کالمہ مراد بائے ایلور
یتھ ترن کھن برہما دکن تہ دیوان

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्या

व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम् ।

पद्मासना च हृदये भवती-मुपास्ते

मातः। स विश्व कवितार्किक चक्रवर्ती ॥ १४॥

شکچ چپ مال اکھ اتھ دارتھ زه
پوستک کمنڈل بیمہ دون اتھن
ویا کھیا نس یٹھ بیا کھ اتھ چھو لگمت
چند مس هیو پپوش زن چہر آسن
کوبن هند چکر ورت بنان سو جگش
یس یٹھ دھیان کری چون موج منزش

बहीवर्तसयुत बर्बर केशपाशा
 गुञ्जावली कृतघनस्तनहार शोभाम् ।
 श्यामा प्रवालवदना सुकुमार हस्ता
 त्वामिव नोमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥ १५ ॥

मोरची मकई सुँस ठे चिकोनी केश सुँस
 रूठे फली हार सुँस ठे शोभायमान
 चिकोनी मकई सुँस ते कोल तहो सुँस ठे
 तहें शकार बाँनी रोपिस बे पर नाम करान

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे ।
 क्रीतं विभोः परुषार्धमिदं त्वयेति ।
 ग्राहीजनस्य परिहासं वचांसि मन्ये
 मन्दस्मितेन तव देवि जडो भवन्ति ॥ १६ ॥

मनोवर्ते सन्दर नो शेर जन
 लिस सख्त बिये कठोर शिबो चिह्नो असन
 प्यानी कम असने सीत मोर चिह्नो तम भिन
 ही नहा सन्दरी चिह्नो ठी असो नये
 किये नये चिह्नो मोर ले चिह्नो हियो सोम
 विसन मन्द तहें हसी पोरुवक वचन

ब्रह्माण्डं बुद्धिं कदम्बकं संकुलोद्य
 नायोदधि - विविधं दुःखं तद्गुणं मालः ।
 व्याश्रयं मूलं भटिति प्रलयं प्रयाति
 त्वद् ध्यानं संततिं महावद्वाम् सुखायै ॥ १७ ॥

दक लेहो सीत बर तहें असोन
 चोन देहियान तहें कौत चिह्नो वाठो वाठन
 बेरमान्ड भेर कल भेर ती मया सन्दर
 अशिचर चिह्नो ही मोर न शिस चिह्नो वाठन

दाक्षायणीति कुठिलेति गुहारणीति -

कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
 एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
 सृष्ट्यस्य बहुविधा ननु त्वकीव ॥ १८ ॥

دکھ پتری ژړی مولا دار داسنی
 پاتیا پنی ژړی مخی ژړی پیه
 چکه ک کلاوتی تنه ژړی بھگو تی
 لبته چھک ایوان بهر روپه پخانی

ध्यानन्द लक्षणमनाहत नानि देशे
 नादात्मना परित्तं तव गम्यमीशे ।
 प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचोद्य मानं
 शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुनःकैश्च धन्याः ॥ १९ ॥

آفتد روپي د تھه چکر س منږ
 ا بهیا س کن انتر تھه منږ کن
 ناد روپه پنی پنی پونځی دھیان
 اشه شمس کری دھیان سوی بهیا گوان

त्वं चन्द्रिका वाशिनि तिमिरहृत्ते रुनिमलं
 त्वं चैतनासि पुरुषे पवने बल त्वम
 त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूषा
 निःसार मैव निविलं त्वदृते यदि स्यात् ॥ २० ॥

ژړی چھک موی لانی چندیس روشنی
 ژړی چھک چیتن پور شمس آد سانی
 ژړی پور شمس آد سانی
 ژړی روپه چکر س منږ دھیان
 ژړی روپه چکر س منږ دھیان

ज्योतीषि यद्विवे चरन्ति यदन्तरिक्षं

सूते पयांसि यदुहि धरणीं च धत्ते ।
 यद्वाति वायु रनलो यदुदर्चिरास्ते
 तत्सर्वं मृच्च ! तव केवलं भाज्यैव ॥२१॥

ہی مانا بر یہ چندرہ تارک
 شیشہ ناگ پس گل پر قہوی داران
 وایو فیران اگن چھو زوتان
 اکاشس پٹھیم پرکاش دیوان
 میگیم روڈ جگلس تراوان
 تم ساری چانی حکمہ سیت چلان

सङ्कोच मिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं
 वाक् तर्कयो स्त्वपुंसि भूमि रनाम रूपा ।
 यद्वा विकास भुपयाति यदा तदानीं
 त्वन्नाम रूप गणनाः सुकरी भवन्ति ॥ २२ ॥

سنگوچہ بڑھا یلہ چھٹے تہ سپدان
 یلہ واکس دیوان چھک تہ ہی گرجی
 تلم تہ موج من تہ بدھ نروکار بنان
 تلم چانی نام روپ نن چھ فیران

भोगाय देवि भवतौ कृतिनः प्रणम्य
 मुकिंकरी कुत सरोज गुहाः सहस्राः ।
 चिन्तामणि-प्रचयकल्पित-केलि शैले
 कल्पदुमोपवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دیوی سکھ بایت بہا گوان
 تلم چانی بمبہ خرچ متن لکھی تہ
 چنتا منی رنک سموہ بنا و متنس
 کلپر و رکھ سستیو بر متن باغن
 یلہ تری چھٹی تم پر نام کران
 ساسہ بڑہ ایشورای چھی روزان
 کھیلی ہندس بہا راس پٹھ تم کھیلان
 منتر تم پچ کال چھٹی فیرانی

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वद्धीन मीशे !
 संसार तापः नाविलं दयया पशूनाम् ।

वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्ता
धर्म निर्ज शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥२४॥

ہی راج جو کس سمسار دوکھ ساری
دو کھن ہندناش زہ مانجھن چھو آسون
چھو کس ٹری ناش کران دیائے کن
دو کھ نورتی چھئی ٹری آدین
شمرادان پنی دلشہ کن

शक्तिः शरीरमुधि देवत मन्तरात्म्या
ज्ञान क्रिया करण मानस जालमिच्छा ।
इश्वर्यमायतनमावरणानि च त्व
किं तन्न यद्ववसि देवि ! आशाङ्क मोले ! ॥२५॥

شریر چہ آسونی شکستی زہ آسونی
جو آتما دھیان شکستی کریا شکستی
یترہا شکستی ایشوری پر یوار ٹری
کیا نہ چھک زہ آسونیہ پس سروپ نشو سہ
وراپ سروپ چھک آسونی ٹری
اندیرہ شکستی آسونی شکستی ٹری
گرہیدین ہنر جائے آسونی ٹری
سوی سروپ چھک پر ی پورن ٹری

भूमौ निवृत्ते रुदिता मयसि प्रतिष्ठा
विद्यानले मरुति शान्तरत्नोत्त शान्ते
व्योमनीति शाः किलकलाः कलयन्ति विश्व
तासां विदूरतर मम्बः पदं त्वन्दीयम् ॥ २६ ॥

پر تھوی منر نورتی کلا روپ ٹری
اگنس منر و دیا کلا زہ آسونیہ
آ کاشس یمہ کلاے گلکس داران
تمو کلا بونشہ دور چون سروپ
جلس منر پر تھشٹ کلا روپ ٹری
پونس منر شاننی کلا ٹری
تمو نشہ دور چون سروپ آسون
تمو نشہ موج دور روزان ٹری

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
 नाङ्गी करोति हृदयेषु जगच्छरष्ये ।
 तावत् विकल्पजडिलाः कुटिलप्रकाश-
 स्तर्कग्रहाः समयिना प्रलयं न यान्ति ॥२०॥

یست تمام نہ یاد جوئی چانی رشن ہر دس
 ہم بحث کرونی اللہ وادی
 ہی جگت رچھونی تہ تانیہ تم شک برھئی
 موڑھ بہاؤ تہند ناش کتی سپدی

यद् देवयान पितृयानविहारमेके
 कृत्वा मनः करणमङ्गल सार्वभौमम् ।
 याने निवेश्य तव कारण पञ्चकस्य
 पर्वणि पार्वति! नयन्ति निजासनत्वम् ॥२८॥

ہم یوگی پرشس پرانا پانہ یوگ
 اندر یہ کھیل تہ من اس کشا رینمیت
 ابھیاس کر کر یلہ پراون
 ہم سواری کران پانٹن کارن

स्थलासु मूर्तिषु महीप्रभावासु मूर्तेः
 कस्याश्चनापि तव वैभव मूढ ! यस्याः ।
 पद्मा गिरामुपि न शक्यत एव वक्तु
 तासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२६॥

یہ تھولہ موڑتی موج چھی آسا
 چانی ہمش و بھوتی چھنے باسا
 گن چانی گیوتھ چھنے تم تی کینہہ ہکا
 معافی دیم مہ چھوس بہ اشا وال
 پر تھوی تہ پٹھ بابا تسس تمام
 کوئی موڑتی منز ہی موج بوانی
 برہما دکن تی چھو تھ مہوسا مہ
 نمئے و بھوتی ہند گن کر مہ گاین

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा -
 वाह्यवतेष भवतीं ममृतौघ वृष्टिम् ।
 प्रथामो घनस्तन ततो सकलो कृतो च
 ध्यायन्त एव जगता गुरवो भवन्ति ॥३०॥

कलान्ते अने पाण्डु गेस ही मोज
 सारोयि मीे قائिम करस پیٹھ
 سمسار ناشس پیٹھ ژه چمکان
 چھک ژه تله امرتک ورسن کران
 تم مोज جگتک گورو چھی سپدان

विद्या परा कतिचिद् म्बर मम्ब ! केचि -
 दासस्य मेव कतिचि त्काले चित्र मायाम् ।
 त्वा विश्व माहुरु परे वय मामनाम
 साक्षात् पार करुणा गुरु मूर्ति मेव ॥३१॥

किनहे चھی तेहर वीया کینهنه چھی آئند
 کینهنه جگت ماما ساکھیات حده روس
 کینهنه چھی مایا روپ ژه مانان
 دیاسروپ گورو روپه اسی ژه زمانان

कुवलय दल नीलं बर्बर-स्निग्ध केश
 युथतर कुच भागु ब्रान्त कान्तावलग्नम् ।
 किमिह बहुविह कै-स्त्वत्स्वरूप पर नः
 सकल भुवन मातः सन्ततं सन्निधत्ताम् ॥३२॥

کولیه برک پاٹھ جھک مآج ژه چمکونی
 سندر کمر سس سیننه گون تراو تھ
 دارمیت ژه هی مोज سندر کیش
 هی مोज آسونی ژه جگتیج ایش
 سناکھ مہ روز تم تدم تپوتھ سندیش
 جگتیج زیادہ و نقتی کیا نیری حاصل

अज्ञानन्तो यान्ति ह्ययमवश्यमन्योन्य कलहे-
रुमी मायागन्धौ तत्र परिलुठन्तः समयिनः ।
जगन्मात जन्मज्वरभयतमः कौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥ १॥

مژدہ وان مورکہ پانہ وینہ راز لڑ
کھنڈ نئی پھبتہ ڈولہ ڈولہ گڑھان
ہی جگت مانا اسی جنمکے جو
آمنت شرک بھی ستمکھ ہی موج
اوش پاٹھ ماشہ بہاوس پتھی وانان
گنڈ نئی پھبتہ ڈولہ ڈولہ گڑھان
بھنے کہ تمہ کوئی چنڈ رہہ ترہ باران
گل گنڈ تھ اس ترہ کن پرنام چھی کران

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव -
प्रबोधाकाराय द्युतिलुलित नीलोत्पल रुचे ।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनम्राय सतत
नमो यस्मै कल्पे च न भवतु गुग्धाय महसि ॥ २॥

واپی کن دھارکن چھک ترہ موج نہ پراونی
پتی اوتھ پیلہ پوشہ زنتی ترہ اس
شووس چھک آراذینی جگتس برٹھاوان
نمسکار اسنے تھ تھتھانہ تیرس
چھک ترہ چیتن سرورپ برہم آسند
تری شو بھایان بیہ گیان نہ آسند
گیانہ کریا رویہ تنہ باری رکن
سارنی موہس اندر انان ترہ بی رکن

लुठद् गुग्गाहार स्तनभर नमन्मध्य - ललितिका
मुदञ्चलमौम्भः कण गुणित नीलोत्पल रुचम् ।
शिवं पार्थ त्राण प्रणण - मुगयाकार - गुणित
शिवा मुन्वग् यान्तीं शवर मुहमन्वैमि शवरीम् ॥ ३॥

رچیدل ہار ترہ نالی تنہ باری نمٹھی
پٹھمتہ گوہریت کہہ فر ترہ شولونی
ارجنس رچھنے تس شیوس پتہ پتہ
تھ ترہ کار ی بھائی روپس ہی موج بوانی
زاوہل کمر پیس ترہ موج شو بھان
پتلی اوتھ پیلہ پوشہ رنگہ چمکان
داہمت تشکاری روپ پیس ترہ آسولن
گل گنڈ تھ تری آمنت چھو سے شرک

मिथः केशकिशि प्रधाननिधनस्तर्क घटना
बद्धश्रद्धा भक्ति प्रणय विषयाश्वास - विधायः ।
अतीद प्रत्यक्षी भव गिरिलुते ! देहि शरण
निरालम्ब चेतः परिलुठति पारिलम्बभितम् ॥ ४॥

بحوث کروں چھی مس کڈاں اکھ اکس
 لڑا لڑتن پتہ ناش چھو سپدان
 سٹھاہ پُرش بھکتی کن تہ پریمہ کن
 شردھائی کن چائی پوڑا کران
 ای مانج پرک بن اسہ پٹھ پر سن بن
 سننوشٹھ بن اسہ روز بجاوان
 اسہ چھی چغل منہ سس تھہ روستی
 تھہ کر اسہ مورج نہ چھی ڈولہ گزہان

शुना वा वहे वा खग परिषदो वा यदशने
 कदा केन केति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति ।

अमुष्मिन्निश्वासं विजहति हि ममाह्वाय वपुषि

अथ ह्येथा श्वेतः सकलजननीमेव शरणम् ॥ ५

ہی منہ پٹھ شربس پٹھ نہ اعتبار
 چھوی خوراک نی انگک یا ناکھی کھوان
 کبر وقتہ کتھ جایہ کتھ پاٹھ کہ طریقہ
 بیئی پٹھ شرب کر کاہر نہ زانان
 میانی من گزہ شرن جگتھ ماجہ کن
 شرب برج متا جلد ژہ تراون

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी
 शिवस्यासौ येत्त्वं परिणय विधौ देवि गृहिणी ।

सवित्री भूतानां मपि यदुद्भूः शैलतनया

तदेतत्ससार प्रणयनं महानाटकं सुखम् ॥ ६

آدانت روس بیہکید روس پریمہ روپ
 آستھتی چھک شیوسنر پریمہ روپ
 وادہ ودھی کن ہی دیوی چھک
 اس بہادیوسنر گراہنی روپ
 ہی ہمالہ متری بیون کران ژہ پیدہ
 سمار لیل چھی چون حشنہ روپ

ब्रुवन्त्येकै तत्त्वं भगवति सदस्ये विदुरसत्

परे मातः । प्राहु स्तव सदस्ये सु कवयः

परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि सुधिय-

तदेतत्तन्माया-विलसितं सुशेषं ननु शिवे !

ہی دیوی کنہہ چھی ونان ژہ تو روپ
 کنہہ چھی ونان تہہ کھوتہ تہہ کی مورج
 کنہہ چھی ونان انرواچہ ژہ اسون
 کنہہ چھی ونان ست کنہہ است روپ
 کنہہ دانا ونان ست است روپ
 کنہہ ونان یہ ساروی چھو چون پھولنہ پھولنہ

तडित्कोटि ज्योति-द्योते दलित षड् ग्रन्थि गहनं

प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिं वपुषा

किमुप्याष्टात्रिंशत्किरणं सकली भूत-मनिशं

भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बबेर कचम् ॥

کشتن شش گندان ژر تھ چھک اژان
 امرت درشن سروپہ کرن وسان
 تنہ باری نمٹھی کیش ژرہ چھکان
 گری گری روزہ نابو سیوا کران

کرورہ اوزملہ سمان چانی وندی
 سوآ وار چھکس بیه توره نیران
 38 کلاروپ جگت وکسا وندھ
 تھ شامہ روپس ہی موج یوانی

चतुष्पत्रान्तः षडदल भग पुठान्त स्त्रिवलय-
 स्फुरत् विद्युद्वह्नि द्युमणि नियता भव्यतेयुते ।
 षडश्र भित्त्वाद्यौ दशदल मथ द्वादश दल
 कलाश्र च द्वाश्र गतवति नमस्ते गिरि सुते ॥ ६ ॥

ترکوس منز ساڑھ تری وار سر یا کار
 شکھتی کنڈ لئی تیتی ژرہ چھکان
 پتہ شوڈشہ دلہ پٹھ چھی نیران
 ہی گرجی چھس تھ سروپس نمکار کران

چوتش دلہ کملہ منز نیر تھ شھ دلہ
 اوزملہ چھک زن ساسہ بد سر یہ زن
 شھ دلہ ژر تھ دشنہ دلہ پتہ دوادشہ دل
 دودلہ منزہ درامچہ نس کنڈ لئی

कुलं केचिन्प्राहु-वैपुरुकुलमुन्ये तव बुधाः
 परे तत्संभेदं समभिदधते कौलमुपरे ।
 चतुर्णां मुप्येषा मुपरि किमुपि प्राहुरपरे
 महामाये ! तत्त्वं तव कथं मुमी निश्चिनुमहे ॥ १० ॥

کینہہ گیانی ونان ژرہ پرمہ شیوروپ
 کینہہ ونان امرکھوتہ تھ چھوچون روپ
 ہی مہامانی کتھ پاٹھ نشیچے
 بناسہ کوسنا چھوچون موج سروپ

کینہہ گیانی ونان چہ ۳۶ توروپ
 کینہہ ونان چھی ژرہ موج شیو شکھتی روپ
 کینہہ ونان کھوتہ تھ کوسنا نیروپ
 بناسہ کوسنا چھوچون موج سروپ

षडध्वारण्यानीं प्रलय रविकौटि प्रतिरुचा
 रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम् ।
 वितन्वानः शैवं किमुपि वपुरिन्दौवर रुचिः
 कुचाभ्यामानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते ॥ ११ ॥

کرور دفقی سس ژرہ پمز لال
 پٹھ تھوان مستک چھک تن اچھان
 گیان کر یا تنہ باری نمٹھ ژرہ شو مہان

شہ وتی سس جگل پملہ کالس پٹھ
 پینن بھکتن بجم چانن پورن
 شیو منز کوسنا نیروپ ژرہ دفقی سس

شیو سندر پور شر کا چھک موح ژہ آسونیہ تنہ شکستی روپس ثری نمکار کران

प्रियङ्गुः श्यामाङ्गी मुरुगतरवासः किसलयो
समुन्मीलान्मुक्ताफल बहुल नैपथ्य दुःसुमाम् ।
स्तनद्वन्द्व स्फार स्तबक नमिता कल्पलतिको
सकृद् द्यायन्तस्त्वा दधति शिव चिन्तामणि पदम् ॥१२॥

ینگه پوشه پاچھ شامہ سندر شر پیرس سرخ دستر چھک ژہ دارانی
چھولمتہ مختہ بیر پوشه لباسه سس تنہ بار غمختی ژہ شو بھانی
ہی دیوی چھک ژہ کلپہ تہر آسونیہ یس اکہ لپہ چون دھیان دارانی
سوی شیو روپی چنتا من رتن چانی دیلے کن چھو پرا دانی

प्रकाशानुन्दाभ्या मविदितचरो मध्य पदवीं
प्रविश्यैतद दृष्ट्व रविशशि समाख्य कवल्यन ।
प्रविश्योर्ध्व नादं लय दहन नस्मीकृत कुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिव मकुल मुख प्रविशति ॥१३॥

گیان کن کر بای کن فیر تھ سو سمنہ اندر اثرت دوشیونی گراس کران
آردہ ناوس اثرت چیت ویم شر اکن کن سارنی جکران بھسم چھ کران
تمہ پتہ چانی اؤ گره کن سادھک اونا شہ شنیو پدس پٹھ اچھو واتان

षडाधारावर्ते रपरिमित मन्त्रोर्मि पटलै -
श्रवलन्मुद्रा फेनै बहुविध लसद् दैवत भषै ।
क्रमस्रोतोभि स्त्वं वहसि परनादा मृत नदीं
भवानि ! प्रत्यगा शिवचिद् मुताब्धि प्रणयिनी ॥१४॥

6 چکر آولنہ نشہ منتر ملکوتشہ مدر رائے کفر نشہ یلہ ژہ نیران
کریم روپہ گاؤنشہ کر مکہ دریاؤنشہ پیرہ ناوامرتہ روپہ یلہ چھک وسان
ہی اموج واتان چھک نوپس دریاؤس شہور روپہ چیت سدرس منتر ژہ روزان

महीपाथो वह्नि श्वसन वियदात्मेन्दु रविभि
वैमुभि ग्रस्तांशै रपि तव कियान्मुखै ! महिमा ।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतरा -

मनुष्यां प्राप्नोति त्वयि तु परमं ज्योम वपुषि ॥ १५ ॥

پرهقوی جل اگن والوتہ آکاش
مشتوکن بنا ومنت چھی ترہ پائے
چائس پرہم آکاشکس سروپس
منز چھنہ یم تی کوئی دیو دس ایوان
سرہ چنہ درمہ برہہ جیو آتما
کوٹاہ چھو موج بوانی چون ہما

मनुष्यां स्तियञ्चो मरुत इति लोकत्रयमित्
भवाम्मोद्यौ मग्ना त्रिगुणलहरी कोटि लुठितम्।
कटाक्षश्चेद्भ्रं क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योय व्रजति परमानन्द-तनुताम् ॥ १६ ॥

منش چاروائی تہ دیو تریلوکی
کرورہ ترہ نت راج تمہ لہرن منز
یدوے یم منز بنہ کینسی چون کما کھ
پرہم آتندکس سروپس شو جلدی
سمسار مدرس منز چھی بھمت
ساکن ملکن منز ڈولہ چھی گیمت
ہی مانا سوزیو ادہ چھو واتان
پرہم پید دیلے چانی کن چھو پراوان

कला प्रज्ञामाद्या समयमनुभूतिं समरसा
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतं परगुह्यं
विधिं विद्यामाहुः सकल-जननीमेव मुनयः ॥ १७ ॥

ہی جگت مانا منیشور چھی تری ومان
گورہ پرہم پراوانی اپدیش بشو کتھا
رہسہ گیان مر یاد تہز برہہ ودیا شکتی
کہ یا بدھ آو الویو سمتا
پرمان نرمان پرتیکھ تہ اتمان
جگت مانا چانی سروپ چھی یم ومان

प्रलीने शब्दौघे तदनुविरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभि रनुपाधि न्युपरते ।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनु कलिते चिन्मात्रगहना
स्वसंविर्त्ति योगी रसायति शिवाख्या परतनुम् ॥ १८ ॥

شہد سونہ روکا و تھ پتہ بندہ و جھوگا لھ
توس پٹھ اتہ سروپس ادہادی رشتس
شا کھتی مار کاک آشریہ چھی یم رطان
سابھاوک شو سروپس تم پراوان
یشٹھ گیان پت آکاشکس منز لین کر تھ
نادہ روپہ پرہم امش منز روکا و تھ
چیتن ماترک ہسہ تم ویر شس کران
تھدس شو سروپس تم سواد کران

परानन्दाकारा निरवधि शिवैश्वर्य वपुषः ।

निराकार ज्ञान प्रकृति मुनवच्छिन्न करुणाम् ।
सवित्री लोकानां निरलिशाय द्यामास्पदपदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम् ॥१६॥

حدہ روس پر ہم آئند روپہ چون دھیان
نروکار گیارہ روس حدہ روس دیاروہ
شس برابری چھٹے موکھ یا سمسار
شیویشوری روپہ یس مانان
جیو پیسہ کروں یس تہ مانان
یس کوئی روپہ چانی سیوا کران

जगत्काये कृत्वा तमुपि हृदये तच्च पुरुषे
मुमांसं बिन्दुस्थं तमुपि परनादाख्यं गहनं ।
तदेव ज्ञानाख्यं तदपि परमानन्दं विभवे
महा व्यामाकारे त्वदनुभवशीलो विजयते ॥२०॥

جگت کا یس منز چھک ہر دہ تہ آسویہ
آتمہ پر شس منز بند و ٹھیکت
نادس منز گیان روپ چون آسویہ
ہی جگت مانا جئے کار تمنی
ہر دس منز چھک آتمہ دیو روپ
بندس منز چھک پرہ نادر روپ
گیانس منز پرانند و بھو روپ
یم کرن چون انو بو ہما کاشہ روپ

विद्ये विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदत्रयस्थे शिवनिधे
शिवे मातमेह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमां ॥२१॥

ہی کیا شکھتی گیان شکھتی وودھ
ہی وچتر روپی چھک تہ جگتہ آد
شیو اگنیائے منز تری سبھا وروپی
شکھ کوی خزانہ چھک آسویہ تہ ہی جوج
سدنقہ آچار روپ ہی وید مانا
وسے کن تہ پراوتی تہ وید جوج سار
شیو پد دیوان تری ہی مانا
بے حد شکھتی دیتے ہی مانا

विद्ये मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदगमयदसां भरणताम् ।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब ! गिरिशः
शिवस्थायाः शक्ते स्तद्विदुः मखिलं ते विलसितम् ॥२२॥

برہما سند کلہ الگ کرتھ تتھ کلس
 بننے فیکي کوی بناؤن زبور
 بننے اتھک پاتر بناوتھ
 ناراین ترشوس پٹھ اورتھ
 شخت کہوتہ سختی زہر کن پنجم شون
 شوس پٹھ چیکپیجہ امی شکتی ہند
 ہوٹہ یس پنوی شو بہراون
 فی سوروی چونی ولاس چھو اسون

विरिञ्चयाख्या मातः। सृजति हरिसङ्गा त्वभवसि
 त्रिलोको रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
 भवन्ती साक्षाख्या शिवयसि च वाशौघदलिनौ
 त्वमेवैका नैका भवसि कृत भेदे गिरिसुते ॥२३॥

برہما نادرہ کن کران پیدہ ترلوکی
 ردرہ نادرہ کن تری چھک کران ستار
 ناراینہ ناوہ کن چھک ثرہ تتھ رجھان
 ایشر دشا چھک تری داوان
 سدا شیوناوہ کن جگتس دیوان ستھ
 یون یون کامیون کن ایک ثرہ باسان
 ہی ہمالہ پتری جی کونی آستھ

सुनीना चेतोभिः प्रसूदितकषायै रपि मनाक्
 प्रशक्ये संस्पृष्टं चकित चाकेतै रम्ब सततम्।
 भ्रुतौना मध्यानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरै
 कथं ते विन्दन्ते पद किसलयै पार्वति! पदम् ॥२४॥

ہی ماتا یم منیشور چھی منہ کیو
 تم تی غوج غوج موج جانن یادن
 گلمیتو دوشوسس آسونی
 سپرش کنس پٹھ چھئی نہ ہیکیون
 چان چرن کلن ہنترہ جائے پراون
 اوپہ نشدہ سجاو کن کٹھن پٹھی تم

तडिद्वलीं नित्या मृषुत सरितं पारराहेती
 मलौत्तौणी उद्योत्सा प्रकृति मगुणग्रन्थि मगुनाम्।
 गिरां दुरा विद्या मबिलत कुदा विश्व जननी-
 मपयेन्ती लक्ष्मी मभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥२५॥

اوزمہ روپ ابار امرت ندی روپ
 والی نشہ دور تری ہنتر و دیا سر روپ
 نرمہ چندرمہ ترگن روپ
 گیان کریا تو نمٹھ جگت ماتا روپ
 یم روپ تہ بیمہ ائمہ لچی روپ
 چھئی وان است زن ہی دیوی چانی

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृति रचितं केवल मिदं -

सुखं दुखं चयं कलयति युमांश्चेतन इति ।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देहो रहयितुं
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते ॥२३॥

چھوئی بن یا نچھوئی بن شریر بر بیان
خود یا ٹھ جو میٹک الو بر کران
چھوئے جو چائی الو گرہ ورس تراوان
پر تھوئی جل رگن والو تہ آکاش
سکھ دیکھ ایو زمان پور شہ جیتن
ہی ہمالہ پتری شہریک اہنکار

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सदा गृहिणी
वसुः पुत्रो मित्र धनमपि तदा मां विजहति ।
तदा मै भिन्दाना सपदि भय मोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने! मात भव करुणया सन्निधिकरी ॥२४॥

شہریک پتر پتر گھرہ بیہ دھن
اندر کارس جلد جلد چوٹی بن
نزدیک پھر ت شہرہ سہ بن
مٹول ماجی بھائی بند لوگر تہ گرہنی
یہی وقتہ تراوغم نمی وقتہ بھئے موہ
ہا پرکاشہ روپک ہنقہ دیا نے کن ماجی

सुता वक्षस्यादौ किल सकल मात स्व मुदभूः
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शक्त्या रम्यपि शक्ति भगवती
विवाहाज्जयासीत्यहह चरितं वेत्ति तव कः ॥२५॥

دکھی پر جاپتہ منتر تری کمار ی
پتہ بنیکہ تری ہمالہ پتری
راہ تہ پوٹ ہی شکھتی بھگوئی
تم چائی پر تر کرکس زانگی
ہی جگت ماتا گروہ متھہ آسکھ
دو شہ کن چھنتن سوئی تری تراو تہ
آدانتہ رستس اس شہرہ شہرہ
دواہ روکسہ ورا دھن ترہ شہرہ

कणा स्वदीप्तीनां रविशशि कुशानु प्रभृतयः
परब्रह्म स्तुवं तव नियत मानन्द कणिका ।
शिवादि शिव्यन्तं त्रिवलय तनोः सर्वे सुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति ॥२६॥

چائی دفتی ہنتر و چھی اکھ رتھرا
اسوون چھوئی اکھ کوٹ ہنترہ
ہی دیوی سر پر چھند درمہ بیہ رگن
پر ہم پر ہم چھوئی چائی متہ آنند منترہ

شون تانہ سندی پٹھ پرتھوی تو تش تانیہ
سارنی ترہ کٹ لنی روپہ روزان
آشچر چھو ماج چون بھکتی چھک چھٹی
ہر دس منتر پر کٹ پاٹھ چھکان

त्वया वो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छत्याम्ब त्वमसि निविला यस्य तनवः ।
गता साम्यं शम्भु वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम् ॥ ३० ॥

چانی کن زانان چانی کن یکھان سوی
چانی کن سو شیو بھکت چھوی بناوان
تری چھک تش سر وپ چانی کن چھوی
سوی سوامہ بہاوس پٹھ و اتان
یلہ تراوان ترہ موج تلہ چانس پرہ
آکاشس منتر لین سپدان
پور: पश्चादन्तर्बहि रुरपरित्यं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकलमुकुलं गुह्यमुगुह्यम् ।
दवीयो नदीयः सदसदिति विश्वं भगवतो
सदा पश्यन्त्याङ्गा वहसि भुवनक्षोभजननीम् ॥ ३१ ॥

برونٹھ بتر اندرہ نمبرہ لوک بل موٹ سکھم
شور وپ شکی روپ گفتہ نور وپ
دور نزدیک ست است روپیش بھکت
تتھ سر شتی تحت سہار چھی کرو تی
جکتی آگنیا کار ترہ زانہ ایوان

मयूखाः मूष्णीव ज्वलन इव तद्दक्षि कणिकाः
मयाधौ कल्लोल प्रतिहित महिम्नीव पृषतः ।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विक कुलै-
भजन्ते तत्त्वोच्चाः प्रशम मनु कल्प परवशाः ॥ ३२ ॥

برہ سندر کن زن آگنیچہ تمہری زن
سمندر کن ملکن ہنترہ پانیہ چھک زن
تتھ پاٹھ شون پٹھ پرتھوی تو تش تانیہ
پرٹھ کلپانٹس اوٹھا وٹھ لٹے سپدان

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः
स्वभावो जैनैर्बु सुगत मुनिराकाशमनिलः ।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां
विकल्पैरेभि स्त्वामभिदधाति सन्तो भगवतीम् ॥ ३३ ॥

پندرہ ویشنو برہما بیہ سرہ
بایدک بھادھت جو ترہ آتھا
آکاش والو شون ہتھی تم
بھیدکن ویدل پٹھ یم و اتان
ست جن یو ناو کن بن بن
ہی موج لوانی جئی جھی سکوان
پربیشیہ سب ماری سہج دتھا دیشیک دشا
بڈھ دھوانتو دھ چھپور گھناتو کھناتو

परमन्दाकारं समदि शिवयन्तौ मयि तनुं
त्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवन्तौ ॥ ३४ ॥

قدرتی دیئے کن گورو سنری نظری کن
تمنی رشیہ دتی سس سمار اندکار
پیمانہ کوی سکھ دیوان ترہ تمنی
بیم شکستی مارگس منتر پردیش کران
دیئے کن موج چھک ترہ گالان
تمنے بہا گوان موج چھک ترہ پراوان

शिवस्त्व शक्तिस्त्व त्वमसि सनया त्वं समायिनौ
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमुणिमादि गुण गुणाः ।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमुप
पृथक् तत् तत्त्वो भगवति न वीक्षामहे इमे ॥ ३५ ॥

ثری چھک ثروتے ثری چھک شکستی
ثری آتما چھک ابدیش چھک ثری
ثری اودیا و دیا حکمتک پدارتھ
ثری سمنے تھ زام وینہ چھک ثری
ثری انما دکھ اشٹ سدھی ثری
ثرہ نشہ کانہہ تو بھی نہ بیون اسی زانان

असंख्यैः प्राचीनैर्जननि जननैः कर्म बिलया-

ज्ञते जन्मन्यन्ते गुरु वपुष मासाद्य गिरिशम् ।
अवाप्याज्ञा शैवी कमलनुरपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत्पूजा स्तुतिं विरचनेनैव दिवसान् ॥ ३६ ॥

ای مانا اسکھ پیران جنم ہند
گورو شو سروپ لبتھ شکستی سروپ پراوتھ
جانی تو تاتہ یوجا کردوں پوروزے
کرم گلنہ کن اونیہ جنم پراوتھ
وارہ پاٹھ موج چون سروپ زانتھ
تھ سیت ترہ نہ بون دن کراوتھ

यत् षट्पत्रं कमल मुदितं तस्य या कर्णिकाख्या
योनि स्तस्याः प्रथित मुदरे यत्तदोकार पीठम् ।
तस्मिन्नन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्ता
श्यामाकारा सकल जननीं सन्ततं भावयामि ॥ ३७ ॥

سوآرھ شان چکس منتر شھ دل
تت منتر آسون لیس چھو بھوک کوش
او مکار چہ جائے پٹھ واس کردنی
تس شامہ سندر مورتی دارونی
پیموش یس چھوی موج آسون
بیجہ کوشس پٹھ او مکار چہ جائے
پوسہ کڈ لئی چھک شتی ترہ روزان
جگت مانتاے ثری نت یہ سمران

भुवि पयसि कुशानौ मारुते त्वे शशाङ्के
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहि मामित्यवश्यम् ॥ ३८ ॥

سریہ چندر مہر تیجن یمن ساطن
تنہ باری ممتھی جگت چہ داران
اوشن پوچھ ترہ کرسون پالن
پریھوی جل اکن والو آکاش
چھک کوئی شکستی گیان کریاروپ
سوی چھک ساری جگتج ثری ملا





